जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

ISSN 2454-4450

मूल्य ₹ 60

हंस

अगस्त 2023

चर्चित महिला विशेषांक अब पुस्तक रूप में

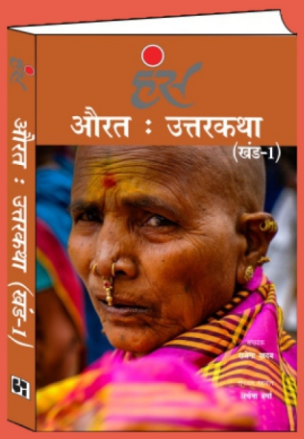

मूल्य 350 रुपए

मूल्य 350 रुपए

मूल्य 350 रुपए

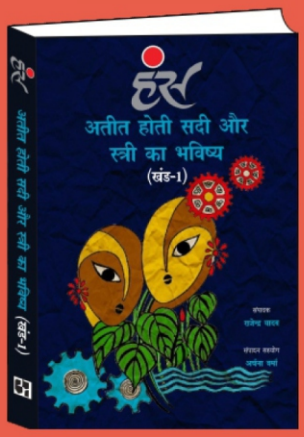

मूल्य 350 रुपए

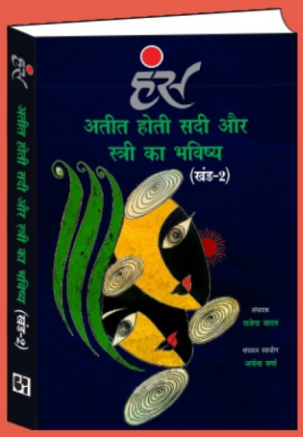

मूल्य 350 रुपए

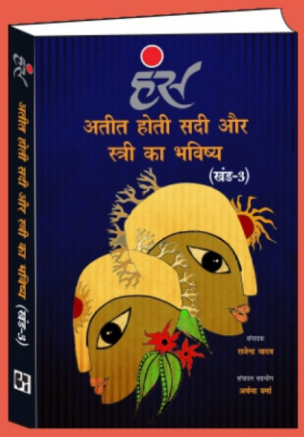

मूल्य 350 रुपए

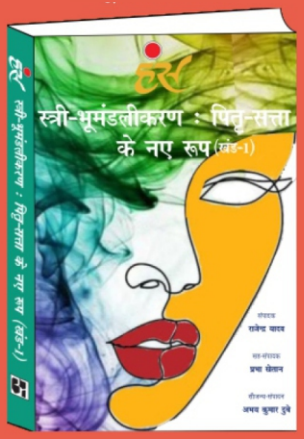

मूल्य 350 रुपए

मूल्य 350 रुपए

मूल्य 400 रुपए

संपर्क : अक्षर प्रकाशन प्रा.लि. 4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
दूरभाष : 011-41050047, मो. 9560685114
Email: editorhans@gmail.com, hanshindi749@gmail.com
web: hanshindimagazine.in

संपादक
संजय सहाय
•
प्रबंध निदेशक
रचना यादव
•
व्यवस्थापक/सह-संपादन सहयोग
वीना उनियाल
•
संपादन सहयोग
शोभा अक्षर
•
प्रसार एवं लेखा प्रबंधक
हारिस महमूद
•
शब्द-संयोजन एवं रूपांकन
प्रेमचंद गौतम
•
ग्राफिक्स
साद अहमद
•
कार्यालय सहायक
किशन कुमार, दुर्गा प्रसाद
•
मुख्य प्रतिनिधि (उ.प्र.)
राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
•
रेखाचित्र
सुभाष पांडे, अशोक अंजुम

कार्यालय
अक्षर प्रकाशन प्रा. लि.
4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2
व्हाट्सऐप : 9717239112, 9560685114
दूरभाष : 011-41050047
ईमेल : editorhans@gmail.com
वेबसाइट :www.hanshindimagazine.in

मूल्य : 60 रुपए प्रति
वार्षिक : 700 रुपए (व्यक्तिगत)
रजिस्टर्ड : 1100 रुपए
संस्था/पुस्तकालय : 900 रुपए (संस्थागत)
रजिस्टर्ड : 1300 रुपए
विदेशों में : 80 डॉलर
सारे भुगतान मनीऑर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. (Akshar Prakashan Pvt. Ltd.) के नाम से किए जाएं.

हंस/अक्षर प्रकाशन प्रा.लि. से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे. अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है. हंस में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं. उनसे हंस की सहमति अनिवार्य नहीं है. साथ ही उनके मौलिक या अप्रकाशित होने का उत्तरदायित्व संपादक और प्रकाशक का नहीं है बल्कि यह दायित्व रचनाकार का है.

प्रकाशक/मुद्रक : **रचना यादव खन्ना** द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., 4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित एवं चार दिशाएं, जी-39/40, सेक्टर-3, नोएडा- 201301 (उ.प्र.) से मुद्रित. संपादक–संजय सहाय.

अगस्त, 2023

मूल संस्थापक : **प्रेमचंद : 1930**
पुनर्संस्थापक : **राजेन्द्र यादव : 1986**

पूर्णांक-442 वर्ष : 38 अंक : 1 अगस्त 2023

आवरणः रोहित प्रसाद

जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

इस अंक में

संपादकीय
4. धधकता मणिपुर और हीरे की एक अंगूठी : संजय सहाय

अपना मोर्चा
6. पत्र

हरिशंकर परसाई जन्मशती विशेष
9. परसाई की सृजनात्मकता को पहचानें : (विश्वनाथ त्रिपाठी से साक्षात्कार)
15. पाखंड का भेद खोलने वाला रचनाकार : नरेश सक्सेना
19. हरिशंकर परसाई और राजेन्द्र यादव : कुछ पत्र

आने वाले दिनों के सफ़ीरों के नाम
22. आज की सच्चाई इतनी... : मृदुला गर्ग

कहानियां
39. अगली सुबह फ़लक पर..... : प्रताप दीक्षित
45. जो भी कहना है घाट... : रजनी शर्मा बस्तरिया
50. फास्ट ट्रैक : संजय सिंह
56. अंधेरा मेरे शहर में : संतोष प्रियदर्शी
62. भीतरी आंख : सुनील गंगोपाध्याय (बांग्ला कहानी) (अनुवाद : दिलीप कुमार शर्मा 'अज्ञात')

कविता
60. राजेन्द्र नागदेव, प्रफुल्ल कुमार रंजन, वंदना मिश्रा
61. सारिका भूषण

बीच बहस में
68. एक पक्ष यह भी : अशोक कुमार

हवाओं की दस्तक
66. धर्मयुग में डॉ. भारती ने जब मेरा इंक्रिमेंट रोका : अनुराग चतुर्वेदी

ग़ज़ल
69. अश्विनी कुमार त्रिपाठी, 73.अभिनव अरुण

लघुकथा
89. चेतन स्वामी

परख
70. लीप शैली में समय की भीतरी परतों को पढ़ने की कोशिश : रोहिणी अग्रवाल
74. मजदूरों के संघर्ष का महत्वपूर्ण दस्तावेज : प्रियम अंकित
79. जिन्हें याद करें सभी : विशाल पांडेय
81. 1849 के भारत में अजंता को सहेजता एक उपन्यास : रीता दास राम
84. रवीन्द्रनाथ टैगोर के उपन्यासों का पुनर्पाठ : अलका तिवारी
87. सीव उधेड़कर देखोगे क्या अब मेरी कंथा की ?: अंकित नरवाल

शब्दवेधी/शब्दभेदी
90. लड़कियां घर-बाहर कहीं भी सुरक्षित नहीं : तसलीमा नसरीन

सृजन-परिक्रमा
92. छाया और काया : रश्मि रावत

रेतघड़ी
96-98

धधकता मणिपुर और हीरे की एक अंगूठी

लगभग तीन महीनों से मणिपुर जल रहा है. देश-विदेश में हो रही चौतरफा निंदा के बावजूद प्रधान वहां जाने का न साहस ही दिखा पाए हैं न उदारता. यह बार-बार देखा गया है कि ऐसे अनेक अवसरों पर प्रधान शुतुरमुर्ग मोड में चले जाते हैं, मानो आंख-मुंह ढक लेने से समस्या खुद ब खुद गायब हो जाएगी. कुश्ती संघ के पूर्व अध्यक्ष के खिलाफ खड़ा पहलवान बेटियों का आंदोलन हो या कृषि कानून के खिलाफ लड़ते-मरते किसानों का! मंत्री पुत्र द्वारा थार से कुचल दी गई जनता की तस्वीरें हों या फिर मित्रों के अरबों के घोटाले हों. प्रजा के नसीब में एक हिकारत भरा मौन आता है और फिर विपक्ष पर आरोप और धाराप्रवाह भर्त्सना.

मणिपुर के बहाने देश में राष्ट्रवाद का एजेंडा चलाने के इरादे से सत्ताधारी दल ने वहां पहले से सुलग रही विभक्तिकरण की आग को भड़का दिया, जिस पर बहुत जल्द ही वे नियंत्रण खो बैठे. भिन्न जातीय समूहों में एक-दूसरे के लिए घोर अविश्वास और नफरत फैल चुकी है. अपने-अपने लोगों के प्रति भावनाओं के आवेग में सरकारी भुजाओं का पक्षपाती रूप साफ उभर आया है. मैतेई समूह कुकी समुदाय के बीच कार्यरत असम राइफल्स पर उनके पक्षधर हो जाने का आरोप लगाता है. जबकि कुकियों का आरोप है कि मणिपुर की पुलिस पूरी तरह मैतेई समूह की जेब में है. समस्याएं बहुत हैं और सबकी सब मानव निर्मित हैं. मैतेई समुदाय खुद को अनुसूचित जनजाति में जोड़े जाने को लेकर आक्रामक है. साथ ही कुकी समुदाय के एक हिस्से को घुसपैठिया मान वह उन्हें बाहर निकालना चाहता है. पहाड़ों में बसने वाले कुकी और नागा तथा घाटी में बसने वाले मैतेई समूहों के बीच भूमि पर अधिकार के प्रतिशत को लेकर भी अनेक विवाद हैं और सबके अपने-अपने तर्क हैं. ईसाई धर्म की बहुलता वाले कुकी और हिंदू बहुलता वाले मैतेई समुदायों के बीच मतभेद एक अरसे से चले आ रहे हैं जिनका हल निकालने की बजाय राजनीति के उस्ताद उस पर अपनी रोटियां सेंक रहे हैं.

बहरहाल, मई 2023 से कम से कम छह से आठ हजार की संख्या में ए.के. सैंतालीस जैसी असॉल्ट राइफलें और 51 मिलीमीटर वाले मोर्टार लांचर तक मैतेई और कुकी समुदाय के बीच बंट चुके हैं. इनमें से कुछ हथियार इन दोनों समुदायों ने भिन्न पुलिस और सैन्य बलों से छीन लिए थे. लेकिन उससे भी भयावह यह है कि सुरक्षाकर्मियों ने ही हथियारों और गोला-बारूद के ताले अपने प्रिय समूहों के लिए खोल दिए थे. इम्फाल से लेकर दिल्ली तक क्या-क्या खेल चल रहा है किसी को नहीं पता. जब सर्वोच्च स्तर पर भीष्म पितामह-सी चुप्पी और धृतराष्ट्र सा अंधापन छाया रहेगा तो अफवाहें भी उड़ेंगी और हस्तिनापुर की लाज भी लुटेगी.

एक उड़ाई गई अफवाह के कारण चार मई को कुकी समुदाय की तीन महिलाओं के साथ जो कुछ घटा वह मानव पिशाचों द्वारा अंजाम दी गई, इंसानियत को शर्मसार करने वाली अकल्पनीय घटना थी. आप सिर्फ कल्पना करें कि भीड़ के हत्थे चढ़ गई वे बेटियां कुकी या मैतेई समुदाय की न होकर हमारी और आपकी बेटियां होतीं तो हम कैसा महसूस करते? अपने आर्टिकल 19 कार्यक्रम के माध्यम से प्रतिरोध की आवाज को बुलंदी से उठाने वाले नवीन कुमार तो इस समाचार को सुनाते हुए बिलख-बिलख कर फट पड़े. और भी अनेक संवेदनशील लोगों का वैसा ही बुरा हाल था. 19 जुलाई को बहुतों के आंसू बहे होंगे, बहुतों का विश्वास टूटा होगा. इन तीन कुकी महिलाओं को पूरी तरह निर्वस्त्र कर इनकी परेड कराई गई, जिस प्रकार से इनका यौन उत्पीड़न किया गया, उसे यहां लिखना भी संभव नहीं. इनमें इक्कीस साल की एक लड़की के साथ सामूहिक बलात्कार भी किया गया. प्राप्त जानकारी के अनुसार उनकी रक्षा के लिए आगे आए एक पिता और भाई की मैतेई आक्रांताओं द्वारा हत्या कर दी गई. सबसे खौफनाक तो यह था कि मणिपुर की पुलिस ने इन स्त्रियों को अपनी सुरक्षा में लेने के उपरांत मैतेई गुंडों के हवाले कर दिया था. लेकिन हुजूर हैं तो सब कुछ मुमकिन है! अब ऐसी जघन्य घटना की खबर भी अगर भारत सरकार के शिखर पर बैठे लोगों को दो महीने पहले ही नहीं मिल सकी थी तो यह हमारी इंटेलिजेंस एजेंसीज़ के माथे पर एक बदनुमा दाग है! और यदि इस घटना की जानकारी के बावजूद राजनीति के शिखर से 19 जुलाई तक चुप्पी काढ़ी रखी गई तो इससे अधिक लज्जाजनक और षड्यंत्रकारी आचरण और कुछ नहीं हो सकता. संभवतः इसके पीछे मैतेई समुदाय के लोगों को संरक्षण देने की मंशा काम कर रही हो. इस देश में पहलू खान और अलीमुद्दीन के हत्यारों का लोक अभिनंदन होने के बाद और बिलकिस बानो के सजायाफ्ता बलात्कारियों और उसके परिवार के हत्यारों की सरकार द्वारा अनुमोदित रिहाई और सार्वजानिक

सम्मान के उपरांत कुछ अधिक कहने को नहीं बचता. इस प्रतिगामी राज में दलितों-आदिवासियों के कपार पर मनुवादियों का मूतना कितना आसान हो चुका है.

खैर, बहुत संभव है कि अपनी चौतरफा छीछालेदर के बीच, माननीय मुख्य न्यायाधीश चंद्रचूड़ की सलाह को मान केंद्र मणिपुर में राष्ट्रपति शासन लगा दे. लेकिन क्या ऐसा बहुत पहले ही नहीं हो जाना चाहिए था? खासकर तब जब वहां के मुख्यमंत्री बेशर्मी से यह स्वीकार रहे हों कि उन तीन स्त्रियों का मामला अनोखा नहीं है कि अब तक ऐसे सौ से अधिक मामले दर्ज किए जा चुके हैं.

•

आमतौर पर भिन्न देशों के राज्याध्यक्ष सौगात में एक-दूसरे को ऐतिहासिक महत्व की वस्तुएं या कलाकृतियां भेंट करते रहे हैं लेकिन हमारे अनूठे-अनोखे प्रधान गोरी जिल को ही अंगूठी डालने पर मचल उठे. वह भी साढ़े सात कैरेट की! साढ़े सात कैरेट को आजादी के पचहत्तरवें वर्ष से खींच-तान कर जोड़ देना दुराग्रह के अलावा और कुछ नहीं. यह बात भी दीगर है कि वह हीरा प्राकृतिक न होकर, मानव निर्मित था और सर्वगुण संपन्न होने के बावजूद प्राकृतिक के मुकाबले रुपए में दस पैसे का था. ऐसी अमौलिक और कलात्मक रूप से महत्वहीन रुचि से जाहिर हो जाता है कि उनके धनपति मित्रों का ओछा चरित्र उनकी सर्वहारा जड़ों को एक भयानक परजीवी की तरह जकड़ चुका है, उसे अपने कब्जे में ले चुका है, उनकी आत्मा पर सवार है. पता नहीं किसी सरकारी कारिंदे ने या चाकरों सी हैसियत रखते मंत्रियों, सांसदों में से किसी ने भी उन्हें यह बताने की जहमत और खतरा मोल लिया या नहीं कि अमेरिकी कानून के मुताबिक यह अंगूठी जिल की उंगली में लिपटने की बजाय अमेरिकी फेडरल गवर्नमेंट के नियंत्रण वाले किसी लॉकर में धर दी जाएगी. प्रयोगशाला में निर्मित होने के बावजूद अंतरराष्ट्रीय बाजार में अपनी चमक, तराश और प्रांजलता के आधार पर इसकी कीमत बीस-पच्चीस हजार डॉलर से कम तो नहीं ही होगी. अमेरिकी नियमों के अनुसार वहां के किसी भी सरकारी सेवक जिसमें अमेरिकी राष्ट्रपति भी शामिल हैं, को 480 अमेरिकी डॉलर से अधिक का तोहफा निजी तौर पर स्वीकार करने की इजाजत नहीं है. लोकाचार और कूटनीतिक रिश्तों की नाजुकता का लिहाज करते हुए अगर वहां के राष्ट्रपति इससे अधिक की राशि का तोहफा स्वीकार करते हैं तो वह अमेरिका के नेशनल आर्काइव एंड रिकॉर्ड एडमिनिस्ट्रेशन द्वारा संग्रहित कर लिया जाता है और वह संयुक्त राज्य अमेरिका की संपत्ति हो जाती है. अलबत्ता, उसका बाजार मूल्य अपनी जेब से चुकता कर अमेरिकी राष्ट्रपति या फर्स्ट लेडी उसे अमेरिकी सरकार से खरीद सकते हैं. वैसे जिल ऐसा करेंगी इसमें घोर संदेह है.

प्रधान के तगड़े नारंगी बालों वाले मित्र ट्रम्प पहले ही दुनियाभर से मिले तोहफों को अघोषित रखने के मामले में विवादों में घिर चुके हैं जिसमें से सत्रह तोहफे उन्होंने तू-तड़ाक करते हुए भारत में अपने 'हमदम' से ही मुंह-दिखाई में वसूल लिए थे. ताजमहल का मॉडल, रत्न-जड़ित महंगे कफलिंक्स सहित कोई चालीस लाख से अधिक की राशि के उपहारों को वह महाशय सुविधानुसार अपनी सरकार को बताना ही भूल गए थे. विश्व की सर्वश्रेष्ठ एंडिंग वाली फिल्मों में शुमार महान फिल्मकार चार्ली चैपलिन की एक फिल्म है 'सिटी लाइट्स', जिसमें चैपलिन कई संयोगों के उपरांत उधार लिए महंगे सूट में और विश्व की सबसे महंगी गाड़ियों में से एक-रोल्स रॉयस को चलाते हुए फुटपाथ पर चलते सिगार पीते एक व्यक्ति का पीछा कर रहा है. उसे सिगरेट पीने की तलब उठी है, किन्तु उसकी जेब में एक दमड़ी भी नहीं है. वह इंतजार कर रहा है कि धूम्रपान करता वह व्यक्ति जब अपना सिगार सड़क पर फेंक देगा तो वह उसे उठाकर दो-चार कश लगा लेगा. जब आदमी सिगार फेंकता है तो सड़क पर चलता एक दूसरा निहायत गरीब राहगीर उसे चैपलिन से पहले उठा लेता है. सूट-बूट में चैपलिन रोल्स रॉयस से झटपट उतरकर आता है और उस गरीब आदमी को धक्का देते हुए झपट्टा मारकर सिगार छीन लेता है. धकिया दिया गया वह राहगीर घोर अचरज से चैपलिन को देखता है. उसके चेहरे पर अविश्वास और गुस्सा एक साथ उतर आता है मानो वह कह रहा हो तुम रोल्स रॉयस में चलते नवाबजादे भी भीतर से इतने चिरकुट होते हो..? खरबपति ट्रम्प की उपरोक्त छिछोरी हरकतों को देख शब्दशः यही कहने का जी करता है.

उम्मीद की जानी चाहिए कि बागड़-बिल्ले से भी अधिक चालाक बाइडेन ने ऐसे किसी भी जाल में फंसने की बजाय उस अंगूठी को अभिलेखागार में जमा करा ही दिया होगा. चूंकि यह न तो उतनी विशिष्ट है कि उसकी कोहिनूर की तरह प्रदर्शनी लगाई जा सके, न मानव-निर्मित हीरा कोई भारत की इजाद है और न ही यह प्रयोशाला में बनाया गया दुनिया का सबसे बड़ा हीरा है जिस पर अपनी तकनीकी श्रेष्ठता की शेखी बघारी जा सके! और न ही यह इतना सस्ता है कि भारत उसे अमेरिकी तोहफों के 'कूड़ेदान' में डालकर भूल जाए. इस पर तो यह विनम्र सी चुटकी ली ही जा सकती है कि लाखों उड़ाकर भी न जिल ही मिली न राम!

•

अट्ठाईस अगस्त को 'राजेन्द्र यादव हंस सम्मान समारोह' में आप सभी का हार्दिक स्वागत है. स्थान–इंडिया इंटरनेशनल सेंटर नई दिल्ली, समय–शाम 5:30 बजे.